

क्रिया के बहाने से छिपाने का चमत्कार वर्णन किया जाता है।

**व्याडि** पुं. (तत्.) एक ऋषि जिन्होंने व्याकरण और शब्दकोश की रचना की।

**व्यादेश** वि. (तत्.) विधि. कोई विशेष कार्य करने के लिए या कोई कार्य न करने के लिए किसी व्यक्ति को दिया गया न्यायालयी आदेश या निर्णय।

**व्याध** वि. (तत्.) 1. बहेलिया, चिड़ीमार, शिकारी 2. दुष्ट व्यक्ति, अधम व्यक्ति 3. एक प्राचीन जाति जो जंगली पशुओं को मारकर अपना जीवन-निर्वाह करती थी।

**व्याधि** स्त्री. (तत्.) 1. शारीरिक रोग, बीमारी काव्य. एक संचारी भाव, शारीरिक अवस्था या वियोग आदि से उत्पन्न मानसिक क्लेश।

**व्याधित** वि. (तत्.) रोग से ग्रस्त, व्याधिग्रस्त, बीमार, अस्वस्थ।

**व्याधिहर** वि. (तत्.) रोग हरण करने वाला, रोगहर, बीमारी दूर करने वाला।

**व्यान** पुं. (तत्.) शरीरस्थ पाँच वायुओं अर्थात् प्राण, अपान, समान, उदान एवं व्यान में से एक जो संपूर्ण शरीर में व्याप्त रहता है।

**व्यापक** वि. (तत्.) 1. सर्वत्र विद्यमान, चारों ओर फैला हुआ, दूर-दूर तक फैला हुआ, आच्छादक 2. जिसके अंतर्गत या कार्यक्षेत्र या प्रभाव क्षेत्र में काफी विषय आते हों, विशद, सर्वसमावेशी 3. सामान्य, आम, जो सभी के लिए लागू हो 4. विस्तृत, गहन उदा. 'हरि व्यापक सर्वत्र समाना प्रेम ते प्रकट होइ मैं जाना' -मानस. तुलसीदास।

**व्यापन** पुं. (तत्.) 1. व्याप्त होना, चारों ओर फैलना 2. चारों ओर से घेरना या ढँकना।

**व्यापना** अ.क्रि. व्याप्त होना, फैलना, घेरना।

**व्यापनीय** वि. (तत्.) 1. व्याप्त करने योग्य, फैलने योग्य 2. जिसे व्याप्त किया जाना हो।

**व्यापन्न** वि. (तत्.) 1. मुसीबत में पड़ा हुआ, विपत्तिग्रस्त, संकटापन्न, कष्ट में पड़ा हुआ,

नष्ट, लुप्त 2. अस्तव्यस्त 3. परिवर्तित (स्वरागम आदि के कारण)।

**व्यापार** पुं. (तत्.) 1. कार्य, काम, क्रिया 2. वणिक् कर्म, वस्तुओं को खरीदने-बेचने का काम 3. धंधा, कारोबार, रोजगार, पेशा 4. उद्योग, उद्यम।

**व्यापाराना** वि. (तत्.) 1. व्यापार से संबंधित, व्यापार की दृष्टि से 2. व्यापार के नियमों के अनुसार जैसे- व्यापाराना कीमत, व्यापाराना नुकसान।

**व्यापारिक** वि. (तत्.) व्यापार से संबंधित, व्यापार का।

**व्यापारित** वि. (तत्.) 1. व्यापार या काम में लगाया हुआ, जिसका व्यापार किया गया हो 2. स्थापित, किसी स्थान पर रखा हुआ, जमाया हुआ।

**व्यापारी** पुं. (तत्.) व्यापार, तिजारत, वाणिज्य कार्य करने वाला, सौदागार उदा. 'आयौ घोष बड़ौ व्यौपारी' -सूरदास।

**व्यापित/व्याप्त** वि. (तत्.) 1. चारों ओर फैला हुआ, जो किसी के अंदर पूरी तरह से फैला, समाया हुआ हो, अंतर्भूत, जिसमें कुछ फैला/ समाया हुआ हो 2. सभी ओर से आच्छादित, ढंका हुआ 3. परिपूर्ण, भरा हुआ।

**व्यापी** वि. (तत्.) 1. चारों ओर फैलने वाला, व्याप्त होने वाला, व्यापक।

**व्याप्ति** वि. (तत्.) 1. किसी वस्तु या स्थान के सभी अंगों या भागों में फैलने या व्याप्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव 2. साधारणतः सभी अवस्थाओं में व्याप्त होने का भाव 3. न्याय. साध्य और साधन का अथवा कथन, तत्व, विषय में दूसरे कथन, तत्व विषय का मिला होना जैसे- अतिव्याप्ति, अव्याप्ति।

**व्याप्य** वि. (तत्.) जो व्याप्त हो सकता हो, व्याप्त होने या करने योग्य, व्यापनीय 2. साधन, हेतु।